International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) Impact Factor : 2.521 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – V, Issue – III October 2016

# एक अमर प्रेम कहानी

डॉ. विनोद श्रीराम जाधव,
हिंदी विभागाध्यक्ष,
मत्स्योदरी महाविद्यालय, अंबड.

पारो–रॉबर्ट की कथा बडी दिलचस्प है। समाज, देश और शब्दों की सीमा को पार कर इस कथा ने दुनिया में अपना एक स्वतंत्र इतिहास पिछे छोड़ा है। छोटे समाज से होने के कारण इसकी किसी ने परवाह नही की, चर्चा नही की, मगर सच्चे प्यार की उमर, बरसों होती हैं। इसी वजह से हम आज कई वर्षो बाद इस कहानी को याद कर रहे हैं।

सन 1819 के दशक में अंग्रेज अधिकारी जॉन स्मिथ को औरंगाबाद के पहाड़ो में निमित्त मात्र से अजिंठा गाँव के पास की बुध्द गुफाएँ बताई गई। जंगल में रहनेवाले बंजारो के मदत से उन्होने इन गुफाओं का बखुबी निरिक्षण किया। इससे वे बड़े ही प्रभावित हुए उन्होंने इन गुफाओं की जानकारी इग्लंड की महाराणी व्हिक्टोरिया को दी। महाराणी ने 1825 में ब्रिटीश लष्कर के मेजर तथा प्रसिध्द चित्रकार रॉबर्ट गील को इन गुफाओं को चित्रीत करने के लिए भारत भेजा। सन 1844 में रॉबर्ट अजिंठा आए, उन्होंने यहाँ आकर पुरे परिवेश का अभ्यास किया, यहाँ के लोगों के बारे में जानकारी ली। वे यहाँ के गोर बंजारा लोग उनकी रिती, रिवाजों से बड़े प्रभावित हुए, आगे चलकर उनकी मुलाखात गोर बंजारा युवती ''पारो'' से हुई। पारो का प्राकृतिक ज्ञान, हिंमत और बहादुरी देखकर रॉबर्ट अचंबीत हुए। पारो सुंदरता के साथ–साथ सर्व गुण संपन्न थी। जंगलो के पेड़–पौधों और जानवरों से पारो पुरी तरह एकरुप थी पारो के इन गुणों से रॉबर्ट दिन–ब–दिन उसकी तरफ आकर्षित होता रहा। यह आकर्षण अनजाने में प्रेम में कब परिवर्तीत हुआ यह उन दोनो को पता ही नहीं चला। आगे अपने संस्कारों को देखते हुए पारो ने रॉबर्ट से शादी करना उचित समजा। पुरी तरह अलग–अलग दुनिया मे रहनेवाले, एक दुसरे की भाषा न जानने वाले दो जीव एक हुए। दोनो का बलीदान असाधारण था। यहा कोई शारीरिक आकर्षण या हीनता नहीं थी। दोनो पवित्र बंधन में बंधे और साथ चलना शुरु किया। कुछ सालबाद 23 में 1856 में प्लेग बिमारी की वजह से पारो का निधन हुआ, इस प्लेग की बिमारी में पारो के साथ उसके गाव के कई लोग मारे गए। रॉबर्ट गील पर इसका गहरा आसर हुआ। उनकी मिलने की जगह पर एक नदी के पास पेड़ के निचे घोड़ रस्ते पर रॉबर्ट ने पारो और उसकी निकट के चार सहेलीओं की समाधी बंधवाई, पारो की समाधी पर लिखवाया– "To the Memory of my Beloved Parro who died on 23 May, 1856"

रॉबर्ट इस समाधी के पास कई साल बैठे रहे फुल चढ़ाते रहे। कुछ दिन बाद उनका मानसिक संतुलन बिघड़ता गया, 10 अप्रैल 1879 को भुसावल के चर्च में रॉबर्ट मृत पाये गए। वहाँ पर उनकी भी समाधी बनी। सालो बितने के बाद मानो आज ये समाधी बोल रही है। उनके अमर प्रेम की कथा सुना

रही है। कोई मानो न मानो कुछ प्रमाण के आधार पर मै इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि पारो बंजारा थी और रॉबर्ट को भी बंजारा रिती रिवाज के अनुसार बंजारा बना लिया गया था। आपके लिए कुछ प्रमाण दे रहा हूँ।

**साहित्य के प्रमाण :**

लमाण ग्रंथ में री.रा.ला.लमाण ने पारो रॉबर्ट की प्रेम कहानी का वर्णन किया है। सन 1980 म कल्पवृक्षाची डहाळीश इस नाटक म प्राचार्य गजमल माळी ने पारो को बंजारा युवती बताया है। इस नाटक में पारो के पोषाख, गाँव, घर का वर्णन करते हुए सब बंजारा समाज के बताए है। प्रसिध्द कवी ना.धो.महानोर ने अपने काव्य संकलन ''अजिंठा'' में पारो को बंजारा कन्या बताया है। इसी काव्य संकलन के प्रस्तावना में कुसुमाग्रज ने पारो को घूमंतू बंजारा कहा है। सन 1980 की लेखिका सुशीला पगारीया ने महाराष्ट्र टाईम्स में पारो को बंजारा आदिवासी संबोधित किया है। बंजारा समाज के प्रसिध्द इतिहासकार और लेखक प्रा.मोतीराज राठोड बताते है, पारो बंजारा ''छोरी'' थी उसने और उसके समाज ने ''अजिंठा''श्जैसी अप्रतिम कलाकृती को विश्व में पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। बंजारा कवी डॉ. कृष्णा राठोड कहते है, बंजारा साहित्य में, लोकगीतों में और लड़ियों में पारो का उल्लेख है, इसीलिए पारो बंजारा ही है। अजिंठा गाँव के बुजुर्ग लोग पारो बंजारा होने के बहोत से प्रमाण भी देते है। अजिंठा गुफाओं के प्रसिध्द मार्गदर्शक (गाईड) आजम चाचा को पारो–रॉबर्ट के प्रेम कहानी के और पारो बंजारा होने के कई सबुत मालुम है। यहाँ से पास ही सोयगाव स्थित प्राचार्य भगवान देशमुख भी पारो बंजारा होने के प्रमाण देते है।

बंजारा लोकगीतों के प्रमाण –

**''हिंदवानी ए मसनमानी**
**तारो डेरा बतादये हिंदवानी...''**

रॉबर्ट को मिलने से पारो को इस मुस्लिम जमीनदार ने आगवा करने की कथा तांडो में प्रचलित है। अगवाई के बाद जब हवेली के पास से पारो को खोजनेवाले युवक गुजरते है तब उपरोक्त फांगगीत वे गाते है। उसके बाद आवाज सुनकर पारो कपड़े सुखाने के बहाने बाहर आकर ''पांबडी'' हिलाकर इशारा करती है। और फिर वहाँ से उसके समाज के लोग उसे मुक्त कराते है। ऐसी एक लोककथा बंजारो में प्रचलित है। इस पुरातन कथा से पारो–रॉबर्ट का संबंध इस समाज से गहरा और अतुट होने की पुष्टी मिलती है। मराठी एवं हिंदी साहित्य में पानी से भरे घड़े का कई जगह पर वर्णन किया है। सोलह साल की जवानी का वर्णन करने के लिए कई जगह पर इन घड़ो का वर्णन है। तथा जवानी के आनंद को पाणी और प्यास से जोडा है। सहकार्य को पानी पिलाना बताया है। रॉबर्ट पारो के इस प्रेम संबंध को शृंगार में परिवर्तन करने का कार्य यह पंक्तीयाँ करती है।

**''पारो गोरामणी मतरो किदी**
**हालमण पाणीया जाय**

**माथेपर बेडलो हातेमा डुंआ ये**
**बेडलो तो मेली, सुंदरी झोलेम**
**झोला खाव ये.... पारी गोरामणी''**

बंजारा जाती में अनेक गोत्र है इनमे से एक है ''गोराम'', गोराम गोत्र की स्त्री को गोरामणी कहा जाता है। उपरोक्त पंक्तीयों में पारो को गोरामणी कहते हुए, इसने, मतरो, याने मित्रता, यारी करने की चर्चा, जवानी को ''बेडलो'' बताते हुए, हाथ में पाणी बटने का साधन हुआ भी दर्शाया है। ''झोल'' याने जंगल का निचला हिस्सा, जहाँ पारो ने रॉबर्ट को अपने बेडे (हांडा) से डुबे के माध्यम से पाणी पिलाया ऐसा गर्भीत अर्थ प्रस्तूत किया है।

**''छोरी पारी ये**
**सायबेरी सोबतण**
**हातेमाही झारी ये**
**डुंगरेरी वेलण..''**

उपरोक्त गद्य पंक्तीयों में पारी (पारो) का साहब (साहेब / रॉबर्ट) की सोबतण (प्रेयसी) बताया है। हात में झारी (झारी यौवन का प्रतीक है) लेकर यह युवती रॉबर्ट की प्यास बुझाती है यह मतीतार्थ बतलाया है। इस युवती की पतली लहराती सुंदरता का वर्णन करने के लिए उसे बेल (लता) बतलाया है। उपरोक्त पंक्तीयाँ एवं इस काव्य के बाकी पंक्तीयों में पारो–रॉबर्ट के प्रेम संबंध को बड़ी सुंदरता पूर्वक वर्णन किया है। बंजारा लोक गीत के इस उत्कृष्ट उदाहरण से पारो गोर बंजारा समाज से होने को पुष्टी मिलती है।

**संदर्भ :**

1) लमाण ग्रंथ – री.रा.ला. लमाण
2) कल्पवृक्षाची डहाळी – नाटक – गजमल माळी (1980)
3) अजिंठा – काव्य संकलन – ना.धो. महानोर
4) महाराष्ट्र टाईम्स – सुशिला पगारीया (1980)
5) अजिंठा – गद्य – प्रा. मोतीराज राठोड
6) बंजारा कवी – कृष्णा राठोड (मौखिक) साक्षात्कार
7) गाईड (मार्गदर्शक) – आजम चाचा, अजंता गुफाएँ (साक्षात्कार)
8) लोकगीत, (बंजारा)